हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-HL6

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनुपम जाखड़

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 6 / 17/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0		9	5	5	3	7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupam

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

अच्छा

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 128 टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल के कवि, चिंतक कबीर के दोहक से उद्धृत हैं। यहाँ 'गुरु को अंग' भाग से यह पंक्तियाँ ली गई हैं।

यहाँ गुरु के ज्ञान रूपी तीर के प्रभाव को कबीर ने वर्णित किया है।

व्याख्या :- कबीर कहते हैं कि गुरु का ज्ञान रूपी तीर उनके शरीर पर लगा तथा वह अन्दर ही रह गया। प्रेम के मार्ग को प्रदर्शित करने वाला यह तीर शरीर में अमिट छाप छोड़ गया।

यहाँ गुरु की आवश्यकता तथा उसके ज्ञान के प्रभाव का कबीर ने वर्णन किया है। ब्रह्म की प्राप्ति के लिए गुरु का पथ प्रदर्शन आवश्यक है।

विशेष :- 1) कबीर की गुरु के प्रति श्रद्धा उजागर हुई है। उन्होंने गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया है।
2) 'कमाँण करि' में अनुप्रास अलंकार है।
3) दोहा छंद
4) मुक्तक रचना

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ व प्रसंग :- यह पंक्तियाँ कृष्णभक्ति काव्यधारा के शीर्षक हस्ताक्षर सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' से संकलित है।
यहाँ गोपियाँ सूरदास के शब्दों में अपनी विरह अवस्था का वर्णन उद्धव के समक्ष कर रही हैं। यहाँ चाँद, 'आग के प्रतीकों से विरह -विदग्धता का वर्णन है

व्याख्या:- उद्धव को गोपियाँ कहती हैं कि तुम हमें भगवान श्रीकृष्ण से अलग कर रहे हो। गोपियाँ कहती हैं जिस पर बीतती है वही जान पाता है कि प्रेम में विरह की क्या स्थिति है। जबसे कमलनयन श्रीकृष्ण से बिछुड़े हैं, तभी से नेत्रों से ~~नयन~~ अश्रुजल बह रहा है। ~~सीतल~~ शीतल चंद्रमा भी अग्नि की भाँति प्रतीत होता है, किसी विधि से धैर्य धारण किया जाए
सूरदास के शब्दों में गोपियों को प्रभु के बिना सारे ~~जतन~~ यत्न व्यर्थ लगते हैं अर्थात् प्रभु मिलन ही अब एकमात्र उपाय है।

5½/10

विशेष :- 1) विरह की भावना का सूरदास ने वक्रतापूर्वक, प्रतीकों व उदाहरणों के माध्यम से वर्णन किया है।
2) द्वितीय पंक्ति में अनुप्रास है।
3) कवित्त छंद का प्रयोग
4) ब्रजभाषा के माध्यम से विरह भावना का सुंदर चित्रण।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' से उद्धृत हैं। प्रगतिवादी व जनवादी कविता के चर्चित रचनाकार नागार्जुन प्रकृति का यथार्थवादी चित्रण कर रहे हैं। यहाँ कालिदास को कल्पनाशील कहकर प्रगतिवादी प्रकृति चित्रण है।

व्याख्या:- बाबा नागार्जुन कहते हैं कि उस कवि कालिदास की बात छोड़ो, उसकी रचनाएँ कल्पनाशीलता पर आधारित थी। सच्चाई तो इन भीषण सर्द हवाओं में, आकाश का चुंबन करने वाली चोटियों के मध्य बादलों का भिड़ना है। यहाँ गरज-गरज करके भिड़ने को नागार्जुन को ~~प्रत्यक्ष~~ आँखों ने देखा है।

यहाँ नागार्जुन ने सैलानी की भाँति प्रकृति चित्रण किया है जो छायावादी वायवियता से रहित है।

विशेष:- 1) 'देखा है' शब्द नागार्जुन की यथार्थवादिता का परिचायक है।
2) छंदमुक्त रचना है परंतु लय बरकरार है।
3) बादलों का घिरना अस्मिता के संकट का भी द्योतक है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ!...

संदर्भ व प्रसंग :- यह पंक्तियाँ प्रयोगवादी व नई कविता के काव्य आंदोलन के प्रणेता अज्ञेय की रचना असाध्यवीणा से ली गई है।

यहाँ पर स्मरण को महत्व देते हुए आत्मशोधन व सृजन की सीख दी गई है।

व्याख्या:- प्रियवंद को वीणा साधते हुए सब कुछ याद आता है, अतीत के उजड़े हुए चित्र चकित व विचलित करते है। परंतु फिर भी, अज्ञेय मैं शैली मैं कहते हैं, सारी ध्वनियों को सुनने का साहस किया जाता है। हर स्वर-कम्पन उसे अंदर से जागृत करता है तथा हवा के नाद से उर्जा से स्फूर्त होकर उड़ने की चेष्टा करता है।

यहाँ आत्मशोधन व आंतरिक साधना की अवस्था का वर्णन किया है।

5½

विशेष: 1) यहाँ अज्ञेय के निजी विचार भी ध्वनी होते है।
2) छंद मुक्त रचना पर गीतात्मक लगती है।
3) स्मृति बिंब
4) काव्य भाषा मिश्रित है।
5) मैं शैली का प्रयोग

10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग :- यह पंक्तियाँ गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना 'ब्रह्मराक्षस' से उद्धृत हैं। यह रचना बुद्धिजीवी मध्यमवर्ग को कर्मशील बनने के लिए प्रेरित करती है।

इन पंक्तियों में पात्र अन्तर्जगत व बाह्य जगत के बीच फँस गया है।

व्याख्या :- ब्रह्मराक्षस बुद्धिजीवी था परंतु क्रम से निष्क्रिय था। उसका अन्तर्जगत व बाह्यजगत से सामंजस्य नहीं हुआ। इस तरह की विपत्ति में वह खत्म हो गया। बावड़ी के अंदर जो प्राचीनता की प्रतीक है, वह अपने आप में अर्थात् आत्मचेतस् में ही मशगूल रहा जिससे वह कर्म से निष्क्रिय हो गया। इस तरह वह गणित के जाल में फँस कर समाज से विमुख हो गया तथा अंतत: मर गया।

5½/10

विशेष :- 1) मिथक का आधार लेकर फैंटेसी शिल्प में रचना की गई है।
2) भाषा में अंग्रेजी व बोलचाल के शब्द भी हैं।
3) छंदमुक्त रचना है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' का प्रतिपाद्य सृजन की प्रक्रिया, उसकी आवश्यकता, उद्देश्य का उद्घाटन करना है। यहाँ अज्ञेय ने जापानी मिथक कथा का भारतीयसंदर्भों में रूपांतरण किया है।

सर्वप्रथम अज्ञेय ने साधक के गुणों की व्याख्या की। इसमें वर बल देने वाले अज्ञेय ने रचनात्मक चिंतन को सृजन माना तथा सृजन को ब्रह्म। सृजन के लिए प्रियवंद जैसा साधक चाहिए जो केशकम्बली अर्थात् बाहरी आवरण से मुक्त हो। यह इसलिए क्योंकि साधना में आत्मशोधन, आत्म-अन्वेषण तथा आत्म-निवेदन होता है जो आंतरिक जगत का हिस्सा है।

यह रचनात्मक चिंतन कलावंत अर्थात् ज्ञान के दंभी नहीं कर सकते। इस राजा कहते हैं-

'हार गए मेरे सब जाने माने कलावंत'

सृजन के मौन की साधना आवश्यक है साधक को साधना में खो जाने की आवश्यकता है। जैसे प्रियवंद - 'भूल गया था केशकम्बली राजसभा को'। साधक की साधना मौन है क्योंकि अज्ञेय मौन को भी अभिव्यंजना मानते हैं-

"मौन प्रियवंद साध रहा था वीणा"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अहं का विसर्जन भी साधक के लिए आवश्यक है। यह बात कबीर ने भी कही थी - "जब मैं था तब हरि नाहीं, अब हरि हैं तो मैं नाहीं"। अपनी सफलता को समर्पित करते जाना तथा क्षोभ न लेना आज के युग की भी आवश्यकता है। प्रियवंद कहते हैं -

"क्षोभ मेरा नहीं
मैं तो स्वयं शून्य में डूब रहा था"

अज्ञेय ने सृजनात्मक रहस्यवाद से व्यष्टि के समष्टि में मिलन को साकार किया है। अज्ञेय का केन्द्रीय चिंतन आंतरिक शक्ति को पहचानना है। यही आंतरिक शक्ति बुद्ध व गाँधीजी को महान बनाती है। कबीर भी इसी की बात करते हैं -

"कस्तूरी कुंडली बसे, मृग ढूँढे वन माहीं
ऐसे घटि घटि राम हैं जिसे दुनिया देखे नाहीं"

'असाध्यवीणा' में सृजन के तत्व का सार रहस्य का सम्पूर्ण में मिलन में है। यहाँ सत्य की अनुभूति भी सबको अलग-अलग होती है। यहाँ संगीत को सृजन का तत्व माना गया है जिसका माध्यम वीणा है। साधक प्रियवंद उदात्त चरित्र है जो वीणा को साधने में सफल रहता है। इस प्रकार असाध्यवीणा में सृजन की गहन व्याख्या की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ब्रह्मराक्षस' मिथक चरित्र है जिसका प्रयोग उस प्रेतात्मा के लिए किया जाता है जो अपने ज्ञान को भावी पीढ़ी को नहीं सौंपकर अपने कार्य को अधूरा छोड़ देती है। इसका प्रयोग गजानन मुक्तिबोध ने अपनी कहानी में भी किया है तथा यह मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का प्रतीक है।

ब्रह्मराक्षस गुरु की खोज करता है तथा स्वयं को कर्मशील बनाने की कोशिश भी करता है परंतु इच्छा, क्रिया तथा ज्ञान में समन्वय स्थापित नहीं कर पाता। यह समस्या 'कामायनी' में भी है-

"ज्ञान दूर क्रिया कुछ भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की"

ब्रह्मराक्षस का संघर्ष बुरे व अच्छे का नहीं, यह संघर्ष अच्छे तथा अधिक अच्छे का है यहाँ आत्मचैतस तथा विश्वचैतस का संघर्ष है परंतु वह इस संघर्ष से पार नहीं पा सकता है जिससे उसकी दुर्गति होती है -

"पिस गया वह भीतरी और बाहरी
दो कठिन पाटों के बीच
ऐसी ट्रेजिडी है नीच"

यह मध्यवर्ग बुद्धिजीवी है, परंतु कर्म से निष्क्रिय। यह कोशिश भी करता है, परंतु सफल नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हो जाता है। जिससे अपराध-बोध से ग्रसित रहता है।
मुक्तिबोध के शब्दों में –

"छपाछप घिस रहा देह ...
फिर भी मैल
फिर भी मैल"

अतः यह मध्यवर्ग जो गणित की प्रमेय तथा थ्योरम में उलझा रहता है। वह जीवन में सही करने की चाह के बावजूद गलत करता रहता है। संक्षेप में उसकी उड़ने की इच्छा ~~खत्म~~ खत्म हो गई है।

"नहीं चाह मुझे शिखरों की यात्रा की
मुझे डर लगता है ऊँचाइयों से"

अतः यह मध्यवर्ग निष्क्रिय व कर्महीन होकर अपराध-बोध से पीड़ित है। इसी की वेदना व जागृति इस कविता का प्रतिपाद्य है।

अच्छा

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन अनभैं सांचा के कवि हैं जो सीधी बात प्रखरता से कहते हैं। इस कविता में नागार्जुन ने प्रकृति का यथार्थवादी चित्रण किया है यह कविता बताती है कि नागार्जुन प्राकृतिक सौंदर्य से लेकर राजनीतिक प्रखरता तक विभिन्न विषयों के कवि हैं।

यह कविता छंद मुक्त कविता है, परंतु लयात्मकता के साथ है। यह लंबी कविता है जो मध्यकालीन महाकाव्य का स्थापन्न है।

नागार्जुन की भाषा प्रसंगानुसार है। यहाँ उन्होंने देशज तथा तत्सम शब्दों के साथ बोलचाल के शब्द भी प्रयुक्त किये हैं। जैसे - अमल, धवल तत्समी शब्द हैं तथा भिड़ना तद्भव शब्द है।

नागार्जुन ने मिथकीय प्रतीकों का प्रयोग किया है। इसमें अलकापुरी, कालिदास हैं। इसके अलावा लोक-प्रतीकों का प्रयोग उनके लोक-जीवन तथा सामाजिक परिवेश के ज्ञान की पहचान कराता है। इसमें चकवा-चकवी, किन्नरियों के उल्लास का वर्णन है।

नागार्जुन के बिंब भी आम जनजीवन से जुड़े हुए हैं। नागार्जुन ने कल्पना को अस्वीकारते हुए प्रकृति का यथार्थवादी चित्रण किया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अलंकारों का प्रयोग भी दृष्टव्य है। 'गरज-गरज भिड़ते देखना' में मानवीकरण अलंकार है। यद्यपि मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित हैं, परंतु यहाँ उन्होंने उसका अतिक्रमण किया है।

रचना की शैली भी प्रसंगानुसार है जिसमें विवरणधर्मिता व सूक्तिपरकता दोनों देखने को मिलती हैं। सौंदर्य चित्रण छायावादी भावुकता से रहित तथा प्रकृति के नैसर्गिक सौंदर्य का वर्णन है-

'मन्द मन्द था अनिल बह रहा
बालरुण की मृदु किरणे थी'

इस प्रकार यह रचना नागार्जुन के शिल्प का अप्रतिम, अनुपम उदाहरण है। यहाँ छंदमुक्त होते हुए भी भाव-प्रेषण के लिए शिल्प शैली व भाव के स्तर पर उत्कृष्ट है।

उत्तम

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन की कविताएँ लोक-समस्याओं से जुड़ी हुई हैं। नागार्जुन को आधुनिक कबीर भी कहा जाता है क्योंकि इन्होंने सामान्य आदमी की आवाज उठाई। अकाल, बेरोजगारी, राजनीतिक अवसरवाद, ग्रामीण जीवन, दलित-अत्याचार, नेवला, कटहल जैसे विविध विषयों पर लिखा। इन विषयों का मूल लोक-समस्याएँ ही हैं।

नागार्जुन ने 'अकाल' कविता में बिना अकाल शब्द के प्रयोग से इसकी भयावहता का बिम्ब उपस्थित किया। उनकी कविताएँ जन सामान्य के लिए समर्पित थी। 'अकाल' की विभीषिका के बाद 'अन्न' आने पर जो अन्न को ब्रह्म समझने की परंपरा तथा खुशी उसे इस प्रकार व्यक्त किया -

'दाने आए घर में कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन के ऊपर कई दिनों ...
चमक उठे घर भर के चेहरे --- -'

नागार्जुन खरी-खरी कहने वाले कवि थे। राजनीति भ्रष्टाचार व अवसरवादिता को आड़े हाथों लिया -

"गाँधी का नाम बेचकर
बतलाओ कब तक खाओगे'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अपनी हरिजन गाथा कविता में उन्होंने सामान्य आदमी को चित्रित किया। यहाँ अकिंचन मनुपुत्र व सौभाग्यवान मनुपुत्र के भेद पर प्रहार किया। समाधान देना रचनात्मक विपक्ष का धर्म है। नागार्जुन समाधान देते हुए कहते हैं-

" अरे भगाओ इस बालक को
यह भारी उत्पाती होगा
दुनिया से जुल्म मिटायेंगे
इसके साथी व संघाती"

नागार्जुन आजादी के मायने तभी स्वीकार करेंगे जब आम आदमी को आजादी मिलेगी। आम-आदमी आज भी गरीबी, मुफलिसी, अशिक्षा से जूझ रहा है। नागार्जुन का संदेश है-

" ~~सुफ~~ सुजला सुफला के गीत अब न हम गायेंगे
जब तक पेटभर दाल भात तरकारी न खाएँगे।"

नागार्जुन मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित जरूर थे, परंतु ~~अब~~ उनका मूल लक्ष्य सामान्य जन का उद्धार था। उन्होंने कहा-

~~क्या है~~ "क्या है दक्षिण क्या है वाम
आम जनता को रोटी से काम"

इस तरह नागार्जुन ने साधारण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रगतिवाद से लेकर जनवादी कविताओं तक कायम रखी। उन्होंने कहा-

" जनता पूछ रही है क्या मैं बतलाऊँ,
जनकवि हूँ साफ कहूँगा क्यों मैं हकलाऊँ"

आरंभिक ... लाइन

अच्छा

11/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप एवं औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

फैंटेसी शिल्प का प्रयोग पहले पश्चिम में हुआ। हिन्दी कविता में इसका सफल प्रयोग मुक्तिबोध ने किया। इन्होंने ब्रह्मराक्षस कविता में फैंटेसी के माध्यम गुंफित जटिलता को सरल करने का प्रयत्न किया।

फैंटसी शिल्प का प्रयोग बहुविध संदर्भों व भावों की अभिव्यक्ति में किया जाता है। इसमें रचनाकार को विवरण में समय बर्बाद नहीं करना होता। मुक्तिबोध कहते हैं - जीवन जटिल है, छोटी कविता, अधूरी कविता होती है। इन जटिलताओं को समेटने के लिए यही शिल्प उपयुक्त है। यहाँ काल-दिक् परिवर्तन, गाँधी, मार्क्स, मनु एक साथ स्वप्न की भाँति उपस्थित हो जाते हैं।

ब्रह्मराक्षस का कथ्य मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी पर केन्द्रित है। इसको दिखाने के कवि ने सारे कथ्य में एक 'लंकड़तोड़ भाषा' में कह दिया है। इसे अनगढ़ तेजोदीप्त भाषा कहा गया। यह एक मौलिक काव्य भाषा है जो यथार्थ का परत दर परत अनावरण करती है। जो आत्मचेतस व विश्वचेतस का अन्तः संघर्ष है वह केवल इस शिल्प द्वारा पाठक तक पहुँचाया जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस शिल्प में न तो छंदों का ध्यान रखा गया है न ही मानक भाषा का। यहाँ बिंबों व प्रतीकों के संयोजन से कथ्य प्रस्तुत किया गया है। कविता में हर तरह का बिंब है- भयानक, घ्राण, ध्वनि, स्मृति। प्रतीकात्मकता भी दृष्टव्य है। यहाँ बावड़ी अतीत का, सीढ़ियाँ परंपरा का तथा लाल-फूल सर्वहारा वर्ग की क्रांति का।

अतः फैंटेसी शिल्प का स्वरूप एक नयी शैली का निर्माण करता है जो प्रयोगवादी, प्रगतिवादी दोनों को अभिव्यक्त करती है। यथार्थ की जटिलता को उद्घाटित करने के लिए इस शिल्प का औचित्य भी है।

अच्छा 8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेन बौद्धमत के प्रभाव के संदर्भ में 'असाध्य वीणा' कविता का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्य वीणा' कविता जापानी मिथक पर आधारित है। यहाँ अज्ञेय ने भारतीय स्वरूप में इसका रूपांतरण किया है। अज्ञेय के जीवन दर्शन की झलक यहाँ मिलती है। अज्ञेय सत्य के अन्वेषी हैं तथा ज़ेन बौद्धमत दर्शन इस कविता में दृष्टिगोचर होता है।

कविता का मुख्य दर्शन माध्यमिक शून्यवाद है। यहाँ जगत को मिथ्या माना जाता है। परम तत्व की प्रकृति परंतु शून्य होती है। परम तत्व के लिए साधना व सृजन की आवश्यकता होती है। यह साधना स्वयं को भुलाकर, बाहरी आवरण से दूर होती है जो प्रियवंद करते हैं- 'भूल गया था केशकम्बली राजसभा को'। इस अवस्था को 'प्रज्ञा पारमिता' कहते हैं। -

"नहीं वह स्वयं को शोध रहा था"
वह महाशून्य, वह महामौन"

यही शून्यवाद योगाचार विज्ञानवाद में भी दिखाई देता है। परंतु शून्य की साधना के लिए साधन योग है। इसका संकेत भी शोधना में मिलता है।

कविता का मूल प्रतिपाद्य सृजनात्मकता है। यह आत्म-अन्वेषण से प्रारंभ होकर आत्मशोधन के द्वारा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आत्मनिवेदन के स्तर पर पहुँचती है।

असाध्यवीणा में उपनिषद का दर्शन भी दिखाई देता है तथा मौन की साधना भी है। परंतु मूल तत्व इकाई का समष्टि में तथा समष्टि का इकाई में मिलन है। ज़ेन बौद्धमत दर्शन कविता के केन्द्र में है जिसे अज्ञेय का जीवन दर्शन भी कहा जा सकता है।

8/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

संदर्भ-प्रसंग :- यह पंक्तियाँ जीवन में समय की महत्ता को बताती हैं। यह पंक्तियाँ अज्ञेय के निबंध 'संवत्सर' से उद्धृत है।

व्याख्या :- यहाँ लेखक समय की नित्यता व प्रवाह के द्वारा जीवन की व्याख्या कर रहा है। इस प्रवाह में हर तरह के क्षण तथा मनुष्य मिलते हैं। अच्छे व बुरे तथा मन के भाने वाले व घृणित हर तरह के मानव से हम मिलते हैं। यह क्रम ही इस सृष्टि का लक्ष्य है तथा प्रकृति की निरंतरता व अनवरतता को स्थापित करता है।

विशेष :- 1) भाषा में एक काव्यात्मकता है। 'साधु - असाधु, प्रिय - अप्रिय' में यह स्पष्ट दिखाई देती है।
2) जीवन दर्शन के लक्ष्य से यह कविता आज भी प्रासंगिक है।
3) वाक्यविन्यास व भाषा पारदर्शी व सहज है।

1/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध आलोचक व निबंधकार रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'कविता क्या है' से संकलित हैं। यह निबंध 'चिंतामणि' संग्रह में है। यहाँ रसदशा का वर्णन शुक्ल जी ने किया है जो मनुष्य व चराचर के तादात्म्य में है, कविता इसका साधन है।

~~व्याख्या~~:-

व्याख्या :- कविता के माध्यम से हृदय मुक्तावस्था में पहुँच जाता है। कविता हृदय का प्रसार करती है तथा उसे एक नई ऊँचाई पर ले जाती है। यहाँ हृदय की मुक्तावस्था को भावयोग की संज्ञा दी गई है। भावयोग में जगत के साथ मनुष्य का समत्वभाव हो ~~जाता~~ जाता है। वह समस्त विश्व में विलीन हो जाता है तथा उसके हृदय का विस्तार हो जाता है।

विशेष :- 1) रसवादी चिंतक शुक्लजी ने भावयोग को नया स्थान दिया है।
2) यहाँ लोकमंगलवाद व रसदशा दोनों उपस्थित हैं।
3) यह पद शुक्लजी की गूढ़ गुंफित विचार परंपरा का उदाहरण है।
4) भाषा परिनिष्ठित व तत्सम है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ शुक्ल जी के निबंध श्रद्धा - भक्ति से उद्धृत हैं।
यहाँ कर्त्ता व कर्म के समाहार से उत्पन्न शक्ति की बात की गई है।

व्याख्या:- कर्म व कर्त्ता का आपसी पूरक संबंध है। कर्म की क्षमता के लिए कर्त्ता ही महत्वपूर्ण है। उन कर्मों से लोग मुग्ध होते हैं तथा कर्त्ता की ओर आकृष्ट भी होते हैं। यह प्रेरणास्रोत का काम भी करता है। इस तरह कर्म के द्वारा कर्त्ता एक केन्द्र बिन्दु बन जाता है जो शक्ति रखता है।

विशेष:- 1) कर्त्ता व कर्म के संबंधों का संश्लिष्ट चित्रण
2) मनुष्य की सद् वृत्तियों का चित्रण यहाँ किया गया है।
3) भाषा पारदर्शी, सरल है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय–भारत–किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

4

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ गुलाबराय के निबंध 'भारतीय-संस्कृति' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर भारत के अतीत व गौरव में विश्व के लिए प्रेरणा बताया गया है।

व्याख्या:- भारत को समस्त विश्व का माना गया है। सारी धरती इसके प्रेम में बंधी हुई है। सृष्टि के प्रारंभ से ही यह मानवता का केन्द्र रहा है। यह धरती का हृदय है तथा सबको प्यारा है।

विशेष:- भारत की महिमा का गुणगान हुआ है जो

1) गुप्तजी ने भी व्यक्त किया है —

"हाँ वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।

2) संवाद व प्रश्नवाचक शैली है।

2/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ नारी उत्थान पर केन्द्रित है।
यहाँ उनके समान अधिकारों की कल्पना की गई है।

व्याख्या:- प्रेम की भावनाएँ व सौंदर्य का चित्रण सामंती दृष्टि से अमर हो रहा है जब यह सामंतवाद दूर होगा तो शुद्ध रूप में सौंदर्य व नारी का वर्णन होगा। नारी को बराबर अधिकार व सम्मान मिलेगा।

विशेष:- 1) यही भाव जयशंकर प्रसाद के शब्दों में
" भूल गये तुम पुरुषत्व मोह में
कुछ सत्ता है नारी की "
2) भाषा सहज व स्पष्ट है।

यह विचार आज भी प्रासंगिक है जब महिला अत्याचार व समान अधिकार की लड़ाई समानांतर चल रही है।

4/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'क्या आपको लगता है कि एक मार्क्सवादी आलोचक एवं निबंधकार होते हुए भी रामविलास शर्मा तुलसी-साहित्य का मूल्य-निर्धारण करते हुए सामान्य मार्क्सवादी अवधारणा का अतिक्रमण करते हैं।' पाठ्यक्रम में निर्धारित निबंध के आधार पर अपना मत प्रकट कीजिए। 20

रामविलास शर्मा मार्क्सवादी आलोचक व निबंधकार हैं। यहाँ पर उनकी विचारधारा आलोचना पर हावी होती है। परंतु 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' निबंध में उन्होंने मार्क्सवादी विचारधारा का अतिक्रमण भी किया है।

रामविलास शर्मा ने मार्क्सवादी तथा प्रतिरोधवादी आलोचकों को अतिवादी कहते हुए खारिज किया। मार्क्सवादी आलोचक तुलसी को सिर्फ धार्मिक दृष्टिकोण से देखते हैं तथा दलित-चेतना वाले उन्हें वर्ण व्यवस्था का पैरोकार मानते हैं। परंतु शर्मा जी ने इसका खण्डन तर्कों के आधार पर किया।

रामविलास शर्मा जातीय परंपरा में विश्वास रखते हैं। हिन्दी भाषी क्षेत्रों की जातीयता उनका मुख्य विषय रही है। उन्होंने भक्ति आंदोलन को भी इसी परिप्रेक्ष्य में देखा। धार्मिक आवरण को स्वीकार करके मार्क्सवादी सीमाओं का उल्लंघन किया।

मार्क्सवादी केवल वर्ग व्यवस्था देखते हैं परंतु रामविलास शर्मा ने जाति व्यवस्था, सामाजिक कारकों को भी महत्व दिया। तुलसीदास को जाति विरोधी माना क्योंकि उन्होंने कहा - 'धूत कहो, अवधूत कहो, जोलहा कहु कोउ'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

तुलसीदास जी ने दरिद्रता, बेरोजगारी का जो वर्णन किया उसका समर्थन उन्होंने सामंत विरोधी कहकर किया। 'दरिद्रता सम दुख नाही' के आधार पर तुलसी को मानवता व समाज का प्रदर्शक कहा।

नारी चेतना भी तुलसीदास जी अपूर्व है। उन्होंने 'शुद्र पशु नारी' वाली उक्ति को स्वीकार नहीं किया। कहा यह पुरोहितों द्वारा मलिन करने का प्रयास है तुलसी ने कहा -

"कत विधि सृजी नारी जग माहीं
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"

यह नारी चेतना मार्क्सवाद का हिस्सा नहीं है। यहाँ पर तुलसीदास जी समर्थन करके शर्मा जी ने मार्क्सवादी सीमाओं का अतिक्रमण किया है 'सर्वजन हिताय' की चेतना को तुलसीदास की रचनाओं में निहित माना।

अच्छा

राम राज्य की कल्पना को लोककल्याणकारी माना। राम का प्रतीक भी जातीय-चरित्र है इसलिए तुलसीदासजी की मूल भावना लोक कल्याणकारी है। यही बात आचार्य शुक्ल के रसवादी लोकमंगलवाद में भी निहित है।

11/20

इस प्रकार रामविलास शर्मा की विचार धारा मार्क्सवादी अवश्य है, परंतु तार्किक व वैज्ञानिक विवेचन करते समय उन्होंने इसका अतिक्रमण भी किया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल निबंधों की दुनिया में युगांतकारी हस्ताक्षर हैं। उन्होंने विचारात्मक, काव्यशास्त्रीय तथा मनोविकारपरक निबंध लिखे। उनकी शैली प्रत्यक्षवादी तथा निगमनात्मक है इसमें वस्तुनिष्ठता व व्यक्तिनिष्ठता का प्रश्न संश्लिष्ट है।

शुक्ल जी का प्रमुख योगदान उनकी वैज्ञानिक शैली है यह शैली मुख्यतः वस्तुनिष्ठ है परंतु शुक्ल जी ने इसके बावजूद निबंधों में सहृदयता, सरसता कायम रखी है वैज्ञानिक शैली 'कविता क्या है' तथा 'श्रद्धा-भक्ति' दोनों में दिखाई देती है यहाँ शृंखलाबद्ध वाक्य विधान, शब्दों का उपयुक्ततम् चुनाव तथा मितव्ययता प्रमुख है शुक्ल जी पहले सत्य का उद्घाटन करते उसके उचित उदाहरणों से स्थापित करते है 'कविता क्या है' मुख्यतः वस्तुनिष्ठ शैली का माना जायेगा क्योंकि यहाँ पर काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर निबंध की रचना की गई है।

श्रद्धा-भक्ति में व्यक्तिनिष्ठ दृष्टिकोण भी गोचर होता है यहाँ पर प्रेम, श्रद्धा तथा भक्ति की सूक्ष्म विवेचना मनोवैज्ञानिक शैली में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है। परंतु सामाजिक संबंधों को भी उद्घाटित किया है। रीति संबंधी श्रद्धा को लोक-कल्याणकारी व समाज के लिए आवश्यक बताया है। इसके परमाकांक्षी ध्येय का विवरण भी सामाजिक दृष्टिकोण से है। अंध ~~भक्त~~ श्रद्धा तथा बाजारवाद के दौर में प्रेम, धर्म, न्याय बिक रहा है यह विचार उनको व्यक्तिनिष्ठ भी बनाते हैं।

अतः संवेदना के आधार पर मुख्यतः उनके निबंध वस्तुनिष्ठ हैं परंतु अंशतः व्यक्तिनिष्ठता भी विद्यमान है।

अच्छा

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिए। 15

यह निबंध प्रेमचंद ने अपने ~~प्रा~~ प्रगतिशील लेखक संघ' के उद्घाटन भाषण में लिखा था। यहाँ भाषण शैली में साहित्य के प्रतिमान, लक्ष्य के बारे में विचार व्यक्त किये।

साहित्य की प्रगतिशीलता उन्होंने समाज में समस्याओं को पहचानकर नई स्थितियों के निर्माण में बतायी। साहित्यकार का उद्देश्य समाज के लिए लिखने में है न कि ~~xx~~ शृंगार व नैराश्यवादी रचनाओं में। प्रेमचंद ~~xx~~ साहित्य को उपयोगिता की वस्तु समझते हैं।

इन्होंने रीतिवादी सौंदर्य वर्णन को स्वीकार नहीं किया तथा साहित्य को अभिजात्यता से मुक्त करने का आह्वान किया। एक खेत में काम करती महिला जिसके पसीना टपक रहा है वह हाथ, होंठ पोती हुई महिला~~ओ~~ के समक्ष सुंदर है।

साहित्य का लक्ष्य सच्चाई की राह दिखाना है। यहाँ साहित्यकार को धनार्जन पर केन्द्रित न होकर इसे सेवा कर्म मानना चाहिए।

साहित्यकार की प्रतिभा ~~xx~~ जन्मजात तो होती है परंतु उसका पोषण मनोविज्ञान, राजनीति,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतिहास सरीखे विषय पढ़कर ही किया जा सकता है। साहित्यकार को जनभाषा में लिखना चाहिए तथा जनता की आवाज उठानी चाहिए।

इस प्रकार प्रेमचंद ने प्रगतिशील लेखक संघ के माध्यम से इन्हीं मूल्यों का आह्वान किया। साहित्य समाज का दर्पण व दीपक दोनों होना चाहिए।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation